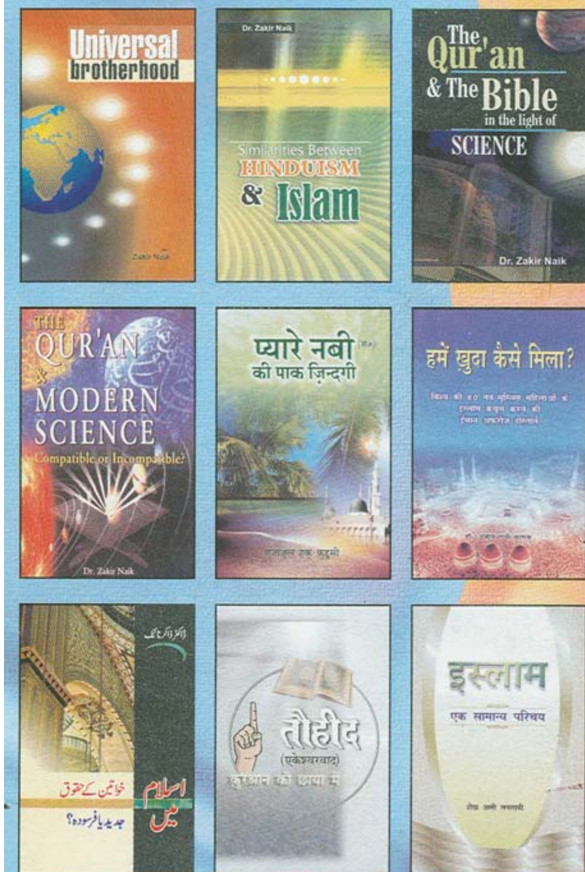
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और भारतीय धर्मग्रन्थ



डॉ०एम०ए०श्रीवास्तव



मधुर सन्देश संगम
E-20, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025

HAZRAT MUHAMMAD AUR BHARTIYA DHARMGRANTH (HINDI)

मधुर संदेश संगम (रजि. ट्रस्ट) प्रकाशन

प्रकाशक मधुर संदेश संगम
E-20, अबुल–फ़ज़्ल इनक्लेव
जामिआ नगर, नई दिल्ली–25
फोन : 26953327, 09212567559
madhursandeshsangam@yahoo.co.in

मिलने का अन्य पता : एम. एम. आई. पब्लिशर्स
D-307, अबुल–फ़ज़्ल इनक्लेव
जामिआ नगर, नई दिल्ली–25

संस्करण : 2008 ई.

पृष्ठ : 40

मूल्य : 15.00

मुद्रक : एच. एस. ऑफ़सेट, नई दिल्ली–2

अनुक्रम

आमुख

अल्लाह अत्यंत कृपाशील और दयावान है। वही सृष्टि का निर्माता है। उसने अपने सर्जित जीवों में इनसान को श्रेष्ठ और महिष्ठ बनाया है। अल्लाह के सभी उदार अनुग्रहों और उसकी अनुकंपाओं की गणना करनी कठिन है, जो उसने इनसानों पर की हैं। उसकी इनसानों पर विशेष कृपा यह रही कि उनके मार्गदर्शन का प्रबन्ध किया और उन्हें सही रास्ता दिखाने के लिए अपने पैग़म्बरों, रसूलों और अवतारों को प्रत्येक क़ौम और समुदाय में भेजा। कुरआन में है : "कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री, जिसमें कोई सचेत करनेवाला न आया हो।" (35 : 24)

"अवतार" का अर्थ यह कदापि सही नहीं है कि ईश्वर स्वयं धरती पर सशरीर आता है, बल्कि सच्चाई यह है कि वह अपने पैग़म्बर और अवतार भेजता है। उसने इनसानों के उद्धार, कल्याण और मार्गदर्शन के लिए अपने अवतार, पैग़म्बर और रसूल भेजे। यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समाप्त कर दिया गया। स्वामी विवेकानन्द और गुरुनानक सरीखे महानुभावों ने भी पैग़म्बरी और ईशदूतत्व की धारणा का समर्थन किया है। वरिष्ठ विद्वानों में पं० सुन्दर लाल, श्री बलराम सिंह परिहार, डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ० पी०एच० चौबे, डॉ० रमेश प्रसाद गर्ग, पं० दुर्गा शंकर सत्यार्थी आदि ने "अवतार" का अर्थ ईश्वर द्वारा मानव-कल्याण के लिए अपने पैग़म्बर और दूत भेजा जाना बताया है। प्राणनाथी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध चिंतक श्री कश्मीरी लाल भगत ने भी इस तथ्य का स्पष्ट समर्थन किया है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की पूर्व सूचना हमें बाइबिल, तौरेत और अन्य धर्मग्रन्थों में मिलती है, यहाँ तक कि भारतीय धर्मग्रन्थों में भी आप (सल्ल०) के आने की भविष्यवाणियाँ मिलती हैं। हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म की पुस्तकों में इस प्रकार की पूर्व-सूचनाएँ मिलती हैं। इस पुस्तिका में सबको एकत्र करके पेश करने का प्रयास किया गया है।

पैग़म्बरों और अवतारों के भेजे जाने का विशिष्ट औचित्य होता है। लोगों में अधर्म की प्रवृत्ति पैदा हो जाने, धर्म के वास्तविक स्वरूप से हट जाने और मूल धर्म में मिलावट हो जाने के कारण पैग़म्बर एवं अवतार भेजे गए, जिन्होंने धर्म को फिर से मौलिक रूप में पेश किया और एक ईश्वर की ओर लोगों को बुलाया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उस समय भेजे गए, जब हज़रत ईसा मसीह

(अलैहि०) को आए हुए पाँच सौ से अधिक वर्ष बीत चुके थे। नबियों (अलैहि०) की शिक्षाएँ नष्ट अथवा विकृत हो चुकी थीं, सनातन धर्म पर अधार्मिकता छा गई थी, ईशभय और ईशपरायणता समाप्त हो चुकी थी। इनसान अपने पैदा करनेवाले को भूला हुआ था। उसने अनेक ईश्वर बना डाले और अपनी दशा इतनी पतित कर डाली कि पेड़, पहाड़, आग, पानी, हवा, धरती, चाँद, सूरज आदि चीज़ों को पूजने में लिप्त हो गया।

इन विकट और विषम परिस्थितियों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आगमन हुआ। आप (सल्ल०) ने अल्लाह के पैग़म्बर के रूप में महान और अनुपम सद्क्रान्ति कर दिखाई। आप (सल्ल०) कोई नया धर्म लेकर नहीं आए थे, बल्कि मानव जाति के आरंभ से चले आ रहे सनातन धर्म (इस्लाम) में आई ख़राबियों और विकृतियों को दूर कर उसे मौलिक रूप में पेश किया। आप (सल्ल०) ने इनसानों को उनकी अस्ल हैसियत बताई और उनकी मिथ्या धारणाओं का उन्मूलन किया। आप (सल्ल०) ने बताया कि इनसान का ईश्वर केवल एक है, वह निराकार है। इनसान को उसी की ही दासता अपनानी चाहिए, उसी की ही इबादत करनी चाहिए। यदि वह इस धारणा और भक्ति-कर्म का इनकार करता है, तो अपने को ग़लत जगह खड़ा कर लेता है, जिसके कारण उसके क़दम ग़लत दिशा में उठने लगते हैं। ऐसे में भला उसकी जीवन-यात्रा कैसे सफल हो सकती है?

जीवन की सुगम, सार्थक, सफल और फलदाई यात्रा के लिए अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर और दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा पेश की गई शिक्षाओं को अपनाया जाए एवं आप (सल्ल०) के बताए मार्ग पर चला जाए, तभी पारलौकिक जीवन को भी सफल बनाया जा सकता है। अब यह सच्चाई छिपी नहीं रही कि भारतीय धर्मग्रन्थों में जिस अवतार(पैग़म्बर) के आने की पूर्व-सूचना दी गई थी, वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। यह पुस्तिका सच्चाई उजागर करने की दिशा में एक प्रयास है। इसका उद्देश्य सत्य को समझना और समझाना है। अत: इसमें वर्णित तथ्यों के सिलसिले में कोई न्यूनता और त्रुटि रह गई हो, तो हमें अवगत कराने का कष्ट करें। अल्लाह हमारी कोशिशों को क़बूल फ़रमाए, आमीन!

स्थान—नई दिल्ली **डॉ० एम०ए० श्रीवास्तव**

दिनांक—12 सितंबर 1997

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और भारतीय धर्मग्रन्थ

सत्य हमेशा स्पष्ट होता है। उसके लिए किसी तरह की दलील की ज़रूरत नहीं होती। यह बात और है कि हम उसे न समझ पाएँ या कुछ लोग हमें इससे दूर रखने का कुप्रयास करें। अब यह बात छिपी नहीं रही कि वेदों, उपनिषदों और पुराणों में इस सृष्टि के अन्तिम पैग़म्बर (संदेष्टा) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई हैं। मानवतावादी सत्य गवेषी विद्वानों ने ऐसे अकाट्य प्रमाण पेश कर दिए, जिससे सत्य खुलकर सामने आ गया है।

वेदों में जिस उष्ट्रारोही (ऊँट की सवारी करनेवाले) महापुरुष के आने की भविष्यवाणी की गई है, वे मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। वेदों के अनुसार उष्ट्रारोही का नाम 'नराशंस' होगा। 'नराशंस' का अरबी अनुवाद 'मुहम्मद' होता है। 'नराशंस' के बारे में वर्णित समस्त क्रियाकलाप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आचरणों और व्यवहारों से आश्चर्यजनक साम्यता रखते हैं। पुराणों और उपनिषदों में कल्कि अवतार की चर्चा है, जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही सिद्ध होते हैं। कल्कि का व्यक्तित्व और चारित्रिक विशेषताएँ अंतिम पैग़म्बर (सल्ल०) के जीवन-चरित्र को पूरी तरह निरूपित करती हैं। यही नहीं उपनिषदों में साफ़ तौर से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम आया है और उन्हें अल्लाह का रसूल (संदेशवाहक) बताया गया है। पुराण और उपनिषदों में यह भी वर्णित है कि ईश्वर एक है। उसका कोई भागीदार नहीं है। इनमें 'अल्लाह' शब्द का उल्लेख कई बार किया गया है। बौद्धों और जैनियों के धर्मग्रन्थों में भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में भविष्यवाणियाँ की गई हैं।

इन सच्चाइयों के आलोक में मानवमात्र को एक सूत्र में बाँधने और मानव एकता एवं अखण्डता को मज़बूत करने के लिए सार्थक प्रयास हो सकते हैं। यह समय की माँग भी है। वैमनस्यता और साम्प्रदायिकता के इस आत्मघाती दौर में ये सच्चाइयाँ मील का पत्थर साबित हो सकती हैं। भाई-भाई को गले मिलवा सकती हैं और एक ऐसे नैतिक और सद् समाज का निर्माण कर सकती है, जहाँ हिंसा, शोषण, दमन और नफ़रत लेशमात्र भी न हो। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर सभी

सच्चाइयों को एक साथ आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस कोशिश में हमें कितनी सफलता मिली यह आप ही बताएँगे। उम्मीद है कि ये सच्चाइयाँ दिल की गहराइयों में उतरकर हम सभी को मानव कलयाण के लिए प्रेरित करेंगी। प्रस्तुत पुस्तिका में डा० वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध ग्रन्थों 'नराशंस और अंतिम ऋषि' और 'कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब' के अलावा अन्य स्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं सामग्रियों का समावेश किया गया है।

मुहम्मद (सल्ल०) और वेद

वेदों में नराशंस या मुहम्मद के आने की भविष्यवाणी कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, बल्कि धार्मिक ग्रन्थों में ईशदूतों (पैग़म्बरों) के आगमन की पूर्व सूचना मिलती रही है। यह ज़रूर चमत्कारिक बात है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आने की भविष्यवाणी जितनी अधिक धार्मिक ग्रन्थों में की गई है उतनी किसी अन्य पैग़म्बर के बारे में नहीं की गई। ईसाइयों, यहूदियों और बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अंतिम ईशदूत के रूप में आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई हैं।

वेदों का 'नराशंस' शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'नर' का अर्थ मनुष्य होता है और 'आशंस' का अर्थ 'प्रशंसित'। सायण ने 'नराशंस' का अर्थ 'मनुष्यों द्वारा प्रशंसित' बताया है।[1] यह शब्द कर्मधारय समास है, जिसका विच्छेद 'नरश्चासौ आशंसः' अर्थात प्रशंसित मनुष्य होगा। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं कि "इसी लिए इस शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिए। 'नराशंस' शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है कि 'प्रशंसित' शब्द जिसका विशेषण है, वह मनुष्य है। यदि कोई 'नर' शब्द को देववाचक मानें तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'नर' शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द ही है और न तो देवयोनियों के अंतर्गत कोई विशेष जाति।"[2]

'नर' शब्द का अर्थ मनुष्य होता है, क्योंकि 'नर' शब्द मनुष्य के पर्यायवाची शब्दों में से एक है। 'नराशंस' की तरह 'मुहम्मद' शब्द का अर्थ 'प्रशंसित' होता है। 'मुहम्मद' शब्द 'हम्द' धातु से बना है, जिसका अर्थ प्रशंसा करना होता है। ऋग्वेद में 'कीरि' नाम आया है, जिसका अर्थ है ईश्वर प्रशंसक। अहमद शब्द

1. नराशंस : यो नरै : प्रशस्यते। (सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता, 5/5/2)। मूल मंत्र इस प्रकार है—"नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्य।" "नराशंस" शब्द का अर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी मनुष्यों द्वारा प्रशंसित बताया है।
(ऋग्वेद हिन्दी भाष्य, पृ० 25, प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
2. 'नराशंस और अंतिम ऋषि', पृ० 5।

का भी यही अर्थ है। अहमद, मुहम्मद साहब का एक नाम है।[1]

वेदों में ऋग्वेद सबसे पुराना है। उसमें 'नराशंस' शब्द से शुरू होनेवाले आठ मंत्र हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंडल, 13वें सूक्त, तीसरे मंत्र और 18वें सूक्त, नवें मंत्र तथा 106वें सूक्त, चौथे मंत्र में 'नराशंस' का वर्णन आया है। ऋग्वेद के द्वितीय मंडल के तीसरे सूक्त, दूसरे मंत्र, 5वें मंडल के पाँचवें सूक्त, दूसरे मंत्र, सातवें मंडल के दूसरे सूक्त, दूसरे मंत्र, 10वें, मंडल के 64वें सूक्त, तीसरे मंत्र और 142वें सूक्त, दूसरे मंत्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन आए हैं। सामवेद संहिता के 1319वें मंत्र में और वाजसनेयी संहिता के 28वें अध्याय के 27वें मंत्र में भी 'नराशंस' के बारे में ज़िक्र आया है। तैत्तिरीय आरण्यक और शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों के अलावा यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी 'नराशंस' का उल्लेख किया गया है।

'नराशंस' की चारित्रिक विशेषताओं की हज़रत मुहम्मद (सल्ल) से साम्यता

वेदों में 'नरांशस' की स्तुति किए जाने का उल्लेख है। वैसे ऋग्वेद काल या कृतयुग में यज्ञों के दौरान 'नराशंस' का आह्वान किया जाता था। इसके लिए 'प्रिय' शब्द का इस्तेमाल होता था। 'नराशंस' की चारित्रिक विशेषताओं की हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से तुलना इस प्रकार है—

1. वाणी की मधुरता

ऋग्वेद में 'नराशंस को 'मधुजिह्व' कहा गया है[2], यानी उसमें वाणी की मधुरता होगी। मधुर-भाषिता उसके व्यक्तित्व की ख़ास पहचान होगी। सभी जानते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) की वाणी में काफ़ी मिठास थी।

2. अप्रत्यक्ष ज्ञान रखनेवाला

'नराशंस' को अप्रत्यक्ष ज्ञान रखनेवाला बताया गया है। इस ज्ञान को रखनेवाला कवि भी कहलाता है। ऋग्वेद संहिता में 'नराशंस' को कवि बताया गया है।[3] मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने कुछ अवसरों पर परोक्ष बातों की

1. पं० रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी 'कान्ति' के 28 अक्तूबर–4 नवम्बर 1990 के अंक में। ऋग्वेद का मूल श्लोक यह है—यो रघ्रस्योचोदिताय : कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ॥ (ऋग्वेद, 2/12/6)
2. नराशंस मिहप्रियम स्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्। (ऋग्वेद संहिता 1/13/3)
3. नराशंस : सुदूषूदतीमं यज्ञमदाम्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः। (ऋग्वेद संहिता 5/5/2)

जानकारी प्रदान की थी अतः पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) ने रोमियों और ईरानियों के युद्ध में रूमियों की हार और नव वर्ष के अंदर ही रूमियों की होनेवाली विजय की पूर्व जानकारी दी थी। नैनवा की लड़ाई में रूमियों की जीत 657 ई० में हुई थी। पवित्र क़ुरआन की सूरा रूम इसी से सम्बन्धित है। रूमियों की पराजय के पश्चात पुनः विजय प्राप्त कर लेने का उल्लेख आया है। इसके साथ ही निकट भविष्य में इनकार करनेवालों पर मुसलमानों के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है।

वे ईश्वर को सबसे अधिक प्यारे और उसे जाननेवाले थे। वे नबी थे। 'नबी' शब्द 'नबा' धातु से बना हुआ शब्द है, जिसका अर्थ सन्देश देनेवाला होता है। आप (सल्ल०) ईश्वर के सन्देशवाहक थे। आचार्य रजनीश के शब्दों में "आप ईश्वर तक पहुँचने की 'बाँसुरी' हैं जिसमें फूँक किसी और की है।"

3. सुन्दर कान्ति के धनी

'नराशंस को सुन्दर कान्तिवाला बताया गया है। इस विशेषता का उल्लेख करते हुए ऋग्वेद में 'स्वर्चि' शब्द आया है।[1]

'स्वर्चि' शब्द का विच्छेद है 'शोभना अर्चिर्यस्य सः' यानी सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त। इस शब्द का तात्पर्य यह है कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति जिसके चेहरे से रौशनी-सी निकलती हो। ऋग्वेद में ही बता दिया गया है कि वह अपने महत्त्व से घर-घर को प्रकाशित करेगा।[2] स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने घर-घर में ज्ञान की ज्योति जलाई, अज्ञान को ख़त्म कर दिया और अंधकार में भटक रहे लोगों को नई रौशनी दी।

ऋग्वेद में ही कहा गया है कि 'अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥ (ऋग्वेद : 8, 6, 10)

सामवेद में भी है : 'अहमिधि पितुः परिमेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥ (सामवेद प्र० 2 द० 6 मं० 8) अर्थात, अहमद (मुहम्मद) ने अपने रब से हिकमत से भरी जीवन व्यवस्था को हासिल किया। मैं सूरज की तरह रौशन हो रहा हूँ।

मुहम्मद साहब इतने सुन्दर थे कि लोग स्वतः आपकी तरफ खिंच आते थे।

1. नराशंस : प्रति धामान्यञ्जन तिस्रो दिव : प्रति मह्वा स्वर्चिः॥ (ऋग्वेद संहिता 2/3/2)
2. नराशंस : प्रतिधामान्यञ्जन तिस्रो दिव : प्रति मह्वा स्वर्चिः॥ (ऋग्वेद संहिता 2/3/2)

इस संदर्भ में रेवरेंड बासवर्थ स्मिथ ने 'मुहम्मद एण्ड मुहम्मेदनिज़्म' में लिखा है कि मुहम्मद साहब के विरोधी भी उनकी आकर्षण शक्ति तथा उनकी गरिमा से प्रभावित होकर उनका सम्मान करने को बाध्य हो जाते थे। तमाम बाधाओं और विरोध के बावजूद मुहम्मद साहब घर-घर में ज्ञान की ज्योति प्रकाशित करते रहे।"

4. पापों का निवारक

ऋग्वेद में नराशंस को 'पापों से लोगों को हटानेवाला' बताया गया है।[1] यह कहने की ज़रूरत ही नहीं है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की समस्त शिक्षाएँ और आप पर अवतरित क़ुरआन समग्र जीवन को पापों से उबार देता है। यह सन्मार्ग का आईना (दर्पण) है जिसे 'देखकर' और उसपर अमल करके व्यक्ति को तमाम पापों से छुटकारा मिल जाता है। उसकी दुनियावी और मरने के बाद की ज़िन्दगी ख़ुशहाल हो जाती है। इस्लाम जुआ, शराब और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से लोगों को रोकता है तथा अवैध कमाई से प्राप्त धन को खाने, ब्याज लेने और किसी का हक़ मारने को निषिद्ध ठहराता है। वह अत्याचार, दमन और शोषण से मुक्त समाज की स्थापना करता है।

5. पत्नियों की साम्यता

'नराशंस' के पास 12 पत्नियाँ होंगी, इस बात की पुष्टि भी अथर्ववेद के उसी मंत्र से होती है जिस मंत्र में उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँट के प्रयोग करने की बात का उल्लेख है। यह मंत्र इस प्रकार है—

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तों द्विर्दश।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।
—अथर्ववेद कुन्ताप सूक्त 20/127/2

अर्थात, जिसकी सवारी में दो ख़ूबसूरत ऊँटनियाँ हैं। या जो अपनी बारह पत्नियों समेत ऊँटों पर सवारी करता है उसकी मान-प्रतिष्ठा की ऊँचाई अपनी तेज़ रफ़्तार से आसमान को छूकर नीचे उतरती है।

इस मंत्र के अनुरूप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बारह पत्नियाँ थीं।

आप (सल्ल०) की पत्नियों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं—1. हज़रत

1. नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे। —ऋग्वेद, 1/106/4
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अहंसो निष्पिपर्तन॥

ख़दीजा (रज़ि०), 2. हज़रत सौदा (रज़ि०), 3. हज़रत आइशा (रज़ि०), 4. हज़रत हफ़्सा (रज़ि०), 5. हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०), 6. हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०), 7. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश (रज़ि०), 8. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा (रज़ि०), 9. हज़रत जुवैरिया (रज़ि०), 10. सफ़ीया (रज़ि०), 11. हज़रत रैहाना (रज़ि०), और 12. हज़रत मैमूना (रज़ि०)[1] उल्लेखनीय है कि और किसी भी धार्मिक व्यक्ति की बारह पत्नियाँ नहीं थीं। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में कुछ महापुरुषों के पास सैकड़ों पत्नियाँ होने का विवरण मिलता है।

6. स्थानगत साम्यता

अथर्ववेद के उपर्युक्त मंत्र में नराशंस द्वारा सवारी के रूप में ऊँटों के उपयोग की जो बात कही गई है, उससे नराशंस की पहचान के साथ उसके आगमन के स्थान का भी बोध होता है। ऊँट की सवारी का अर्थ यह हुआ कि नराशंस जिस स्थान में पैदा होगा वहाँ ऊँटों की प्रचुरता होगी। ऊँट रेगिस्तानी क्षेत्र में अधिक पाए जाते हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म अरब के रेगिस्तानी क्षेत्र में हुआ।

7. अन्य साम्यताएँ

अथर्ववेद में अन्योक्ति अलंकार के माध्यम से नराशंस के बारे में पहचान की कतिपय बातें भी बताई गई हैं।

कुन्ताप सूक्त में है—

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते।

इसका अर्थ बताते हुए पं० क्षेम करण दास त्रिवेदी लिखते हैं—"हे मनुष्यो! यह आदर से सुनो कि मनुष्यों में प्रशंसावाला पुरुष बड़ाई किया जाएगा।"[2]

एक अन्य मंत्र में कहा गया है—

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्॥ (अथर्ववेद 20, 127, 3)

अर्थात, ईश्वर मामहे ऋषि को सौ सोने के सिक्के देगा, दस हज़ार गायें देगा, तीन सौ अरबी घोड़े देगा और दस हार।

1. अल्लामा इब्ने ज़री की किताब में यही क्रम है।
2. अथर्ववेद हिन्दी भाष्य, पृ० 1401, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

यहाँ मामहे ऋषि से मतलब मुहम्मद (सल्ल०) से है। आप (सल्ल०) को ईश्वर द्वारा सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने का तात्पर्य ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति से है जो रत्नवत महत्व के हों। मुहम्मद (सल्ल०) जो शिक्षाएँ लोगों को देते थे उनकी सुरक्षा का कार्य सौ व्यक्ति करते थे। ये अस्हाबे सुफ़्फ़: कहलाते थे। ये लोगों को शिक्षाओं की जानकारी भी देते थे और शिक्षाओं की रक्षा भी करते थे।

इसी प्रकार दस हज़ार गो प्रदान किए जाने का अर्थ 'अच्छे व्यक्ति दिए जाने से है। 'गो' अलंकारिक शब्द है, जो साधारणतया अच्छे व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं के अनुयायियों की संख्या आपके जीवन काल के अंतिम चरण में दस हज़ार थी। मक्का को जीतने के लिए मदीना से जाते समय आपके सहायकों की संख्या दस हज़ार थी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दस हज़ार अनुयायी जब मक्का पहुँचे तो वहाँ न किसी प्रकार का युद्ध हुआ न ही किसी अनुयायी ने किसी को नष्ट किया, इसी कारण से उन दस हज़ार लोगों को गो कहा गया।

नराशंस को तीन सौ अर्वन की प्राप्ति का अर्थ ऐसे वीर योद्धाओं की प्राप्ति है जो घोड़े की तरह तेज़ हों। 'अर्वन' शब्द का शाब्दिक अर्थ घोड़ा होता है। यह भी गो की भाँति अलंकारिक शब्द है। बद्र की लड़ाई में मुहम्मद (सल्ल०) के साथियों (सहाबा) की संख्या तीन सौ थी।

नराशंस को दस स्रज: या गले का हार दिए जाने से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति हैं जो गले के हार के समान हों और नराशंस को प्रिय हों। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दस ऐसे व्यक्ति थे, जो उनपर अपने प्राणों को भी समर्पित करने को तैयार रहते थे। वे गले के हार की तरह मुहम्मद (सल्ल०) के चारों तरफ़ हमेशा रहते थे। ये दसों व्यक्ति अशरः मुबश्शरः कहे जाते हैं। **ये हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के वे साथी (सहाबी) हैं,जिन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई।**
इनके नाम हैं—अबूबक्र(रज़ि०),उमर(रज़ि०),उसमान बिन अफ़्फ़ान(रज़ि०),तल्हा (रज़ि०),अली(रज़ि०),सअद बिन अबी वक्क़ास(रज़ि०),सईद बिन ज़ैद(रज़ि०),अब्दुर्रहमान बिन औफ़(रज़ि०),अबू उबैदा बिन जर्राह(रज़ि०) और ज़ुबैर(रज़ि०)।

अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है कि 'ऐ लोगो, यह (ख़ुशख़बरी) ध्यानपूर्वक सुनो, नराशंस की प्रशंसा की जाएगी। साठ हज़ार नब्बे दुश्मनों में इस हिजरत करनेवाले, अमल फैलानेवाले को हम (सुरक्षा) में लेते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में भी मामहे ऋषि के दस हज़ार साथियों (सहाबा) का ज़िक्र आया है। मंत्र इस प्रकार है—

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोन:।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभि: सहस्रैर्वैश्वानर: त्र्यरुणाश्चिकेत॥

(ऋग्वेद म० 5, सू० 27, मंत्र 1)

अर्थात, हक़परस्त, अत्यन्त विवेकशील, शाक्तिशाली, दानी मामहे ऋषि ने कलाम (वाणी) के साथ मुझे सुशोभित किया। सर्वशक्तिमान, सब ख़ूबियाँ रखनेवाला, सारे संसार के लिए 'कृपामय' दस हज़ार सहयोगियों (सहाबा) के साथ मशहूर हो गया।

मामहे ऋषि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी मामहे ऋषि को मुहम्मद (सल्ल०) ही माना है।

पुराणों के प्रमाण

भविष्य पुराण और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

केवल वेद ही नहीं बल्कि पुराणों में भी मुहम्मद साहब का कार्यस्थल रेगिस्तानी क्षेत्र में होने का उल्लेख आता है। भविष्य पुराण में स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि 'एक दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आएँगे। उनका नाम महामद होगा। वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आएँगे।'[1] इस अध्याय का श्लोक 6, 7, 8 भी मुहम्मद साहब के विषय में है। पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) के जन्म स्थान सहित अन्य साम्यताएँ कल्कि अवतार से भी मिलती हैं, जिसका वर्णन कल्कि पुराण में है। इसकी चर्चा बाद में की जाएगी।

यहाँ यह उल्लेख कर देना उचित होगा कि भविष्य पुराण में कई नबियों (ईशदूतों) की जीवन गाथा है। इस्लाम पर भी विस्तृत अध्याय है। इस पुराण में एकदम सटीक तौर पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विषय की बातें आती हैं। इसमें जहाँ महामद आचार्य के नाम की मुहम्मद शब्द से निकटता है, वहीं पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) की पहचान की अन्य बातें बिल्कुल सत्य उतरती हैं। इनमें ज़रा भी व्याख्या की ज़रूरत नहीं है। भविष्य पुराण के अनुसार, शालिवाहन (सात वाहन) वंशी राजा भोज दिग्विजय करता हुआ समुद्र पार (अरब) पहुँचेगा। इसी दौरान (उच्च कोटि के) आचार्य शिष्यों से घिरे हुए महामद (मुहम्मद सल्ल०) नाम से विख्यात आचार्य को देखेगा। (प्रतिसर्ग पर्व 3, अध्याय 3, खंड 3, कलियुगीतिहास समुच्चय) भविष्य पुराण में कहा गया है—

लिंड्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम। 25।
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति। 26 ॥

1. एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः ॥
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः ॥

तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः। 27 ॥

(भ०पु० पर्व 3, खण्ड 3, अध्याय 1, श्लोक 25, 26, 27)

इन श्लोकों का भावार्थ इस प्रकार है—'हमारे लोगों का ख़तना होगा, वे शिखाहीन होंगे, वे दाढ़ी रखेंगे, ऊँचे स्वर में आलाप करेंगे यानी अज़ान देंगे। शाकाहारी मांसाहारी (दोनों) होंगे, किन्तु उनके लिए बिना कौल यानी मंत्र से पवित्र किए बिना कोई पशु भक्ष्य (खाने) योग्य नहीं होगा (वे हलाल मांस खाएँगे)। इस प्रकार हमारे मत के अनुसार हमारे अनुयायियों का मुस्लिम संस्कार होगा। उन्हीं से मुसलवन्त यानी निष्ठावानों का धर्म फैलेगा और ऐसा मेरे कहने से पैशाच धर्म का अंत होगा।'

भविष्य पुराण की इन भविष्यवाणियों की हर चीज़ इतनी स्पष्ट है कि ये स्वतः ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर खरी उतरती हैं। अतः आप (सल्ल०) की अंतिम ऋषि (पैग़म्बर) के रूप में पहचान भी स्पष्ट हो जाती है। ऐसी भी शंका नहीं है कि इन पुराणों की रचना इस्लाम के आगमन के बाद हुई है। वेद और इस तरह के कुछ पुराण इस्लाम के काफ़ी पहले के हैं।

संग्राम पुराण की पूर्व-सूचना

संग्राम पुराण की गणना पुराणों में की जाती है। इस पुराण में भी ईश्वर के अंतिम ईशदूत और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की पूर्व-सूचना मिलती है। पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने अपनी मशहूर किताब "अंतिम ईश्वरदूत"[1] में लिखा है : "कागभुसुन्डी और गरुड़ दोनों राम की सेवा में दीर्घ अवधि तक रहे। वे उनके उपदेशों को न केवल सुनते ही रहे, बल्कि लोगों को सुनाते भी रहे। इन उपदेशों की चर्चा तुलसीदास जी ने 'संग्राम पुराण' के अपने अनुवाद में की है, जिसमें शंकर जी ने अपने पुत्र षण्मुख को आनेवाले धर्म और अवतार (ईशदूत) के विषय में पूर्व-सूचना दी है।" अनुवाद इस प्रकार है—

यहां न पक्षपात कछु राखहुं।
वेद, पुराण, संत मत भाखहुं ॥
संवत विक्रम दोऊ अनङ्ग।
महाकोक नस चतुर्पतङ्ग ॥

1. यह किताब 1927 ई० में नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, दरियागंज, दिल्ली से सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी।

राजनीति भव प्रीति दिखावै।
आपन मत सबका समझावै॥
सुरन चतुसुदर सतचारी।
तिनको वंश भयो अति भारी॥
तब तक सुन्दर मद्दिकोया।
बिना महामद पार न होया॥
तबसे मानहु जन्तु भिखारी।
समरथ नाम एहि व्रतधारी॥
हर सुन्दर निर्माण न होई।
तुलसी वचन सत्य सच होई॥

(संग्राम पुराण, स्कन्द, 12, कांड 6 : पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास)

पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने इनका भावानुवाद इस प्रकार किया है— "(तुलसीदास जी कहते हैं :) मैंने यहाँ किसी प्रकार का पक्षपात न करते हुए संतों, वेदों और पुराणों के मत को कहा है। सातवीं विक्रमी सदी में चारों सूर्यों के प्रकाश के साथ वह पैदा होगा। राज करने में जैसी परिस्थितियाँ हों, प्रेम से या सख़्ती से वह अपना मत सभी को समझा सकेगा। उसके साथ चार देवता (प्रमुख सहयोगी) होंगे, जिनकी सहायता से उसके अनुयायियों की संख्या काफ़ी हो जाएगी। जब तक सुन्दर वाणी (क़ुरआन) धरती पर रहेगी (उसके) और महामद (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के बिना मुक्ति (निजात) नहीं मिलेगी। इनसान, भिखारी, कीड़े-मकोड़े और जानवर इस व्रतधारी का नाम लेते ही ईश्वर के भक्त हो जाएँगे। फिर कोई उसकी तरह का पैदा न होगा (अर्थात्, कोई रसूल नहीं आएगा), तुलसीदास जी ऐसा कहते हैं कि उनका वचन सत्य सिद्ध होगा।[1]।"

1. कोष्ठक में दिए गए शब्द व्याख्या के लिए लिखे हैं।।
यहाँ एक और मंतव्य स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा कि संग्राम पुराण की गणना भले ही अर्वाचीन पुराणों में की जाती हो, लेकिन इसका आधार प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथ ही हैं, जैसा कि अन्य पुराणों व ग्रंथों एवं विचारों के आधार पर अर्थात भूतकालिक प्रमाणों की रौशनी में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की सूचना दी गई है। अतः पुराण के अर्वाचीन अथवा प्राचीन होने से संबंधित तथ्य के निरूपण में कोई गतिरोध नहीं पैदा होता।

कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपने एक शोधपत्र में मुहम्मद (सल्ल०) को कल्कि अवतार बताया है। कल्कि और मुहम्मद (सल्ल०) की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करके डा० उपाध्याय ने यह सिद्ध कर दिया है कि कल्कि का अवतार हो चुका है और वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। इस शोधपत्र की भूमिका में वे लिखते हैं—

"वैज्ञानिक अणु विस्फोटों से जो सत्यानाश संभव है, उसका निराकरण धार्मिक एकता सम्बन्धी विचारों से हो जाता है। जल में रहकर मगर से बैर उचित नहीं, इस कारण मैंने वह शोध किया जो धार्मिक एकता का आधार है। राष्ट्रीय एकता के समर्थकों द्वारा इस शोधपत्र पर कोई आपत्ति नहीं होगी। आपत्ति होगी तो कूपमण्डूक लोगों को, यदि वे कूप के बाहर निकलकर संसार को देखें तो कूप को ही संसार मानने की उनकी भावना हीन हो जाएगी।". . . . "मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस शोध पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि अखिल भूमण्डल में एकता की लहर दौड़ पड़ेगी और धर्म के नाम पर होनेवाले कलह शांत होंगे।'

यहाँ पर इस शोधपत्र की ख़ास बातें और अन्य स्रोतों से प्राप्त तद् विषयक सामग्री पेश की जा रही है।

अवतार का तात्पर्य

अवतार शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'तृ' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगाकर बना है। इसका अर्थ पृथ्वी पर आना है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है— सबको संदेश देनेवाले महात्मा का पृथ्वी पर जन्म लेना। कल्कि अवतार को ईश्वर का अन्तिम अवतार बताया गया है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द में 'का' शब्द सम्बन्धकारक चिह्न है, अतः ज़ाहिर है कि ईश्वर से संबद्ध व्यक्ति का अवतीर्ण होना। ईश्वर से संबद्ध कौन है? उसका भक्त ही सबसे संबद्ध हो सकता है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को 'कीरि' कहा गया है। हिन्दी में 'कीरि'

शब्द का अर्थ 'ईश्वर का प्रशंसक' और अरबी में 'अहमद' होता है। लेकिन क्या ईश्वर का प्रशंसक 'कीरि' या 'अहमद' एक नहीं हो सकता। हर देश और समय के लिए अलग-अलग अवतार हुए हैं क्योंकि एक अवतार से पूरे विश्व का कल्याण नहीं हो सकता था। क़ुरआन में है कि हर भाग में रसूल (संदेशवाहक) भेजे गए। अंतिम अवतार कल्कि की अलग विशेषता है। वे किसी एक हिस्से के लिए नहीं वरन् समग्र विश्व के लिए भेजे गए।

जब लोग वास्तविक धर्म से विमुख होकर अधर्म की राह पकड़ लेते हैं या धर्म को अपने स्वार्थ के लिए तोड़-मरोड़ देते हैं, तो उन्हें फिर सही मार्ग दिखाने के लिए ईश्वर अपने अवतार या पैग़म्बर भेजता है।

अंतिम अवतार के आने का लक्षण

कल्कि के अवतरित होने का समय उस माहौल में बताया गया है, जबकि बर्बरता का साम्राज्य होगा। लोगों में हिंसा व अराजकता का बोलबाला होगा। पेड़ों का न फलना, न फूलना। अगर फल-फूल आएँ भी तो बहुत कम। दूसरों को मारकर उनका धन लूट लेना और लड़कियों को पैदा होते ही पृथ्वी में गाड़ देना। एक ईश्वर को छोड़कर कई देवी-देवताओं की पूजा, पेड़-पौधों एवं पत्थरों को भगवान मानने की प्रवृत्ति, भलाई की आड़ में बुराई करने की प्रवृत्ति, असमानता आदि है। ऐसे ही नाज़ुक दौर में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भेजे गए थे।

सातवीं शताब्दी के शुरू में रोमन और पर्सियन साम्राज्यों की जितनी बुरी अवस्था थी, उतनी शायद कभी नहीं हुई। बाइजेन्टाइन साम्राज्य के क्षीण हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था। पादरियों के दुष्कर्मों और दुष्टताओं के फलस्वरूप ईसाई धर्म बहुत गिर गया था। पारस्परिक संघर्षों और शत्रुता के कारण अफ़रा-तफ़री का आलम था। इस समय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भेजे गए। इस्लाम धर्म रोमन साम्राज्य के संघर्षों से दूर था। इस धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफ़ान की तरह से सम्पूर्ण पृथ्वी पर छा जाएगा और अपने समक्ष बहुत-से साम्राज्यों, शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा जैसे कि आँधी मिट्टी को उड़ा देती है।[1] इसी प्रकार सेल ने क़ुरआन के अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है—"गिरजाघर के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले

1. 'Apology for Mohammed', by Gofrey Higgins, Pags. 2

थे और शांति प्रेम एवं अच्छाइयाँ लुप्त हो गई थीं। वे मूल धर्म को भूल गए थे। धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार बनाए हुए परस्पर कलह करते रहते थे। इसी पृथ्वी में रोमन गिरजाघरों में बहुत-सी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगीं और मूर्ति-पूजा बहुत ही निर्लज्जता से की जाने लगी।[1] इसके परिणामस्वरूप एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर हो गए और मरयम को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा। अज्ञानता के इस दौर में अल्लाह ने अपना अंतिम रसूल भेजा।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि अन्तिम अवतार उस समय होगा जबकि युद्धों में तलवार का इस्तेमाल होता होगा और घोड़ों की सवारी की जाती हो। भागवत पुराण में उल्लेख है कि 'देवताओं द्वारा दिए गए वेगगामी घोड़े पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों और गुणों से युक्त जगत्पति तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे।[2] तलवारों और घोड़ों का युग तो अब समाप्त हो चुका है। आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व तलवारों और घोड़ों का प्रयोग होता था। उसके लगभग सौ वर्ष बाद से बारूद का निर्माण सोडा और कोयला मिलाकर होने लगा था। वर्तमान समय में तो घोड़ों और तलवारों का स्थान टैंकों और मिसाइलों आदि ने ले लिया है।

कल्कि का अवतार-स्थान

कल्कि के अवतार का स्थान शम्भल ग्राम में होने का उल्लेख कल्कि एवं भागवत् पुराण में किया गया है। यहाँ पहले यह निश्चय करना आवश्यक है कि शम्भल ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण। डा० वेद प्रकाश उपाध्याय के मतानुसार 'शम्भल' किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को 'शम्भल' नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बताई गई होती। भारत में खोजने पर यदि कोई 'शम्भल' नामक ग्राम मिलता है तो वहाँ आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरुष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो। फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो

1. Translation of the Qur'an, by Gorage Sale, First Translation/Preface on pages 25/26
2. अश्वमाशुगमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः।
   असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः॥
   (भागवत् पुराण,12 स्कंध, 2 अध्याय,19वां श्लोक)

जाए और समाज में ज़रा-सा परिवर्तन भी न हो, अत: 'शम्भल' शब्द को विशेषण मानकर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है।

(1) 'शम्भल' शब्द 'शम्' (शांत करना) धातु से बना है अर्थात, जिस स्थान में शान्ति मिले।

(2) सम् उप सर्गपूर्वक 'वृ' धातु में अप् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ। वबयोरभेद: और रलयोरभेद: के सिद्धांत से शम्भल शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ 'जो अपनी ओर लोगों को खींचता है या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है'।

(3) 'शम्वर' शब्द का निघण्टु (1/12/88) में उदकनामों के पाठ हैं। 'र' और 'ल' में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान'।[1]

इस प्रकार वह स्थान जिसके आसपास जल हो और वह स्थान अत्यंत आकर्षण एवं शांतिदायक हो, वही शम्भल होगा। अवतार की भूमि पवित्र होती है। 'शम्भल' का शाब्दिक अर्थ है—शांति का स्थान। मक्का को अरबी में 'दारुल अमन' कहा जाता है, जिसका अर्थ शांति का घर होता है। मक्का मुहम्मद (सल्ल०) का कार्यस्थल रहा है।

जन्म तिथि

कल्कि पुराण में अंतिम अवतार के जन्म का भी उल्लेख किया गया है। इस पुराण के द्वितीय अध्याय के श्लोक 15 में वर्णित है—

"द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, माधवे मासि माधवम्।
जातो ददृशतु: पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ॥

अर्थात "जिसके जन्म लेने से दुखी मानवता का कल्याण होगा, उसका जन्म मधुमास के शुक्ल पक्ष और रबी फसल में चन्द्रमा की 12वीं तिथि को होगा।" एक अन्य श्लोक में है कि कल्कि शम्भल में विष्णुयश नामक पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे।[2]

मुहम्मद साहब (सल्ल०) का जन्म 12 रबीउल अव्वल को हुआ। रबीउल

1. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब,(पृ० 30)
2. शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मन:।
भवने विष्णुयशस: कल्कि: प्रादुर्भविष्यति॥
(भागवत पुराण,द्वादश स्कंध,2 अध्याय,18वाँ श्लोक)

अव्वल का अर्थ होता है : मधुमास का हर्षोल्लास का महीना। आप मक्का में पैदा हुए। विष्णुयशस: कल्कि के पिता का नाम है, जबकि मुहम्मद साहब के पिता का नाम अब्दुल्लाह था। जो अर्थ विष्णुयश का होता है वही अब्दुल्लाह का। विष्णु यानी अल्लाह और यश यानी बन्दा = अर्थात अल्लाह का बन्दा = अब्दुल्लाह।

इसी तरह कल्कि की माता का नाम सुमति (सोमवती) आया है जिसका अर्थ है—शांति एवं मननशील स्वभाववाली। आप (सल्ल०) की माता का नाम भी आमिना था जिसका अर्थ है शांतिवाली।

अन्तिम अवतार की विशेषताएँ

कल्कि की विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के जीवन (सीरत) से मिलती-जुलती हैं। इन विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन यहाँ पेश किया जा रहा है।

1. अश्वारोही और खड्गधारी—पहले लिखा जा चुका है कि भागवत पुराण में अंतिम अवतार के अश्वारोही और खड्गधारी होने का उल्लेख है। उसकी सवारी ऐसे घोड़े की होगी जो तेज़ गति से चलनेवाला होगा और देवताओं द्वारा प्रदत्त होगा। तलवार से वह दुष्टों का संहार करेगा। घोड़े पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भी फ़रिश्तों द्वारा घोड़ा प्राप्त हुआ था, जिसका नाम बुर्राक़ था। उसपर बैठकर अंतिम रसूल ने रात्रि को तीर्थयात्रा की थी। इसे 'मेराज' भी कहते हैं। इस रात आपकी अल्लाह से बातचीत हुई थी और आपको बैतुलमक़्दिस (यरूशलम) भी ले जाया गया था।

मुहम्मद साहब को घोड़े अधिक प्रिय थे। आपके पास सात घोड़े थे। हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को देखा कि घोड़े पर सवार थे और गले में तलवार लटकाए हुए थे।[1] आपके पास नौ तलवारें थीं। कुल परम्परा से प्राप्त तलवारें जुल्फ़िक़ार नामक तलवार, क़लईया नामवाली तलवार।

2. दुष्टों का दमन—कल्कि के प्रमुख विशेषताओं में एक विशेषता यह भी है कि यह दुष्टों का ही दमन करेगा।[2] धर्म के प्रसार और दुष्टों के दमन में मदद के लिए देवता भी आकाश से उतर आएँगे।[3] हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुष्टों

1. बुखारी शरीफ़ की हदीस
2. भागवत पुराण 12-2-19
3. यात यूयं भुवं देवा: स्वांशावतरणे रता:। (कल्कि पुराण, अध्याय 2, श्लोक 7)

का दमन किया। उन्होंने डकैतों, लुटेरों और अन्य असामाजिक तत्त्वों को सुधारकर मानवता का पाठ पढ़ाया और उन्हें सत्य मार्ग दिखाया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसे कुसंस्कृत लोगों को सुसंस्कार से रहना सिखाया। औरतों को उनका हक़ दिलाया। एकेश्वर के साथ तमाम देवताओं के घालमेल का आपने ज़ोरदार खंडन किया तथा कहा कि इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है, बल्कि सनातन धर्म है। दुष्टों के दमन में आपको फ़रिश्तों की मदद मिली। कुरआन मजीद में अल्लाह कहता है कि अल्लाह ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद दी और तुम बहुत कम संख्या में थे, तो तुमको चाहिए कि तुम अल्लाह ही से डरो और उसी के शुक्रगुज़ार होओ। जब तुम मोमिनों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा रब तुमको तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर मदद करे, बल्कि अगर उसपर सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो, तो अल्लाह तुम्हारी मदद पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा।[1]

सूरा अहज़ाब में भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को ईश्वर की मदद मिलने का उल्लेख है। इस सूरह की आयत संख्या 9 में वर्णित है कि "ऐ ईमानवालो! अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ आईं तो हमने भी उनके विरुद्ध पवन और ऐसी सेनाएँ भेजीं, जिनको तुम नहीं देखते थे, और जो कुछ तुम कर रहे थे, वह अल्लाह देख रहा था।" इस प्रकार दुष्टों का नाश करने में ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मदद के लिए अपने फ़रिश्ते और अपनी सेनाएँ भेजी।

3. **जगत्पति**—पति शब्द 'पा' (रक्षा करना) धातु में उति 'प्रत्यय' के संयोग से बना है। जगत का अर्थ है संसार। अत: जगत्पति का अर्थ हुआ संसार की रक्षा करनेवाला। भागवत पुराण में अंतिम अवतार कल्कि को जगत्पति भी कहा गया है।[2]

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जगत्पति[3] हैं, क्योंकि उन्होंने पतनशील समाज को

1. कुरआन, सूरा आले इमरान, आयत संख्या 123, 124 और 125।
2. भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 19वाँ श्लोक
3. संस्कृत के व्याकरणाचार्य वामन शिवराम आप्टे ने "पति" शब्द का अर्थ "प्रधानता करनेवाला" भी बताया है (देखिए, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 568, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स संस्करण 1989)। इस प्रकार जगत्पति का अर्थ हुआ : संसार में प्रधानता करनेवाला। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जिस इस्लाम धर्म को लेकर आए, वह यद्यपि मानव

बचाया। उसकी रक्षा की और संमार्ग दिखाया। आप सारे संसार के लोगों के लिए ईश्वर का संदेश लेकर आए। कुरआन में है—"ऐ मुहम्मद एलान कर दो कि सारी दुनिया के लिए नबी होकर तुम आए हो।"[1] एक अन्य स्थान पर है—"अत्यंत बरकतवाला है वह जिसने अपने बंदे पर पवित्र ग्रन्थ कुरआन उतारा ताकि सम्पूर्ण संसार के लिए वह पापों का डर दिखानेवाला हो।"[2]

4. **चार भाइयों के सहयोग से युक्त**—कल्कि पुराण के अनुसार चार भाइयों के साथ कल्कि कलि (शैतान) का निवारण करेंगे।[3]

मुहम्मद (सल्ल०) ने भी चार साथियों के साथ शैतान का नाश किया था। ये चार साथी थे—अबू बक्र (रज़ि०), उमर (रज़ि०), उसमान (रज़ि०) और अली (रज़ि०)।

5. **अन्तिम अवतार**—कल्कि को अन्तिम युग का अंतिम अवतार बताया है।[4] मुहम्मद (सल्ल०) ने भी एलान किया था कि मैं अंतिम रसूल हूँ।

'कल्कि' शब्द का अर्थ 'वाचस्पत्यम्' तथा 'शब्दकल्पतरु' में अनार का फल खानेवाले तथा कलंक को धोनेवाले किया गया है। पैग़म्बर (सल्ल०) भी अनार और खजूर का फल खाते थे तथा प्राचीन काल में आगत मिश्रण (शिर्क) और नास्तिकता (कुफ़्र) को धो दिया।[5]

जीवन के आरंभ से विद्यमान था, परन्तु आप (सल्ल०) के ज़रिए इसे पूर्णता और प्रधानता प्राप्त हुई। कुरआन में अल्लाह का कथन है : "आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को "दीन" (धर्म) की हैसियत से पसन्द किया।" (5 : 3)
अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने संसार में सत्य को प्रधानता दी, उसे फैलाया और लोगों को इसके लिए उभारा कि स्वयं भी सत्य का अनुसरण करें और दूसरों तक सत्य-संदेश पहुँचाएँ। आप (सल्ल०) के द्वारा नेकियों और अच्छाइयों को प्रधानता मिली। अच्छे शील स्वभाव और नैतिकता की पूर्ति हुई। एक हदीस में आप (सल्ल०) ने कहा : "अल्लाह ने मुझे नैतिक गुणों और अच्छे कामों की पूर्ति के लिए भेजा है।" (शरहुस्सुन्नह)

1. कुरआन, सूरा आराफ़, आयत संख्या 158
2. कुरआन, सूरा फ़ुरक़ान, आयत संख्या 1
3. चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्। (कल्कि पुराण अध्याय 2, श्लोक 5)
4. भागवत पुराण के 24 अवतारों के प्रकरण में कल्कि सबसे अंतिम अवतार हैं। (भा० पु० प्रथम स्कंध, तृतीय अध्याय, 25वाँ श्लोक)
5. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ० 41

6. उपदेश और उत्तर दिशा की ओर जाना—कल्कि पैदा होने के पश्चात पहाड़ी की तरफ़ चले जाएँगे और वहाँ परशुराम जी से ज्ञान प्राप्त करेंगे। बाद में उत्तर की तरफ़ जाकर फिर लौटेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) भी जन्म के कुछ समय बाद पहाड़ियों की तरफ़ चले गए और वहाँ जिबरील (अलैहि०) के ज़रिए अल्लाह का ज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद वे उत्तर मदीने जाकर वहाँ से फिर दक्षिण लौटे और अपने स्थान को जीत लिया। पुराणों में कल्कि के बारे में ऐसा भी लिखा है।

7. आठ सिद्धियों और गुणों से युक्त—कल्कि अवतार को भागवत पुराण 12 स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में 'अष्टैश्वर्यगुणान्वित:' (आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त) बताया गया है। ये आठ ईश्वरीय गुण महाभारत में भी उल्लेख किए गए हैं। ये गुण निम्न हैं—

1. वह महान ज्ञानी होगा।
2. वह उच्च वंश का होगा।
3. वह आत्मनियंत्रक होगा।
4. वह श्रुतिज्ञानी होगा।
5. वह पराक्रमी होगा।
6. वह अल्पभाषी होगा।
7. वह दानी होगा और
8. वह कृतज्ञ होगा।[1]

अब हम इन गुणों को पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) के गुणों से क्रमवार साम्यता करेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) महान ज्ञानी थे। उनमें प्रज्ञा दृष्टि थी।

आप (सल्ल०) ने भूत और भविष्य की अनेक बातें बताईं, जो एकदम सत्य सिद्ध हुईं।

पहले उल्लेख किया गया है कि रूमियों की हार और बाद में उनकी जीत की भविष्यवाणी मुहम्मद (सल्ल०) ने की थी। आपकी दूरदर्शिता से संबंधित अनेक उदाहरण हैं, जो आपके उच्च ज्ञान को सिद्ध करते हैं।

मुहम्मद (सल्ल०) उच्च वंश में पैदा हुए। आपका जन्म 571 ई० में क़ुरैश की पंक्ति में हाशिम परिवार में हुआ था, जो अरब के निवासियों द्वारा माननीय

1. अष्टौगुणा : पुरुषं दीपयन्ति, प्रज्ञा च कौल्यं च दम श्रुतंच।
पराक्रमश्चा बहुभाषिता च, दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च। —महाभारत

और काबा का परम्परागत संरक्षक था।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इन्द्रियदमन या आत्मनियंत्रण का ईश्वरीय गुण भी प्राप्त था। आप आत्मप्रशंसा से हीन, दयालु, शांत, इन्द्रियजीत और उदार थे।[1]

आप श्रुतिज्ञानी भी थे। श्रुत का अर्थ है, 'जो ईश्वर के द्वारा सुनाया गया और ऋषियों द्वारा सुना गया हो'। मुहम्मद (सल्ल०) पर जिबरील (अलैहि०) नामक फ़रिश्ते के ज़रिए ईश्वरीय ज्ञान भेजा जाता था। लेनपूल अपनी पुस्तक "Introduction; Speeches of Muhammad" में लिखते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) को देवदूत की सहायता से ईश्वरीय वाणी का भेजा जाना निस्संदेह सत्य है। सर विलियम म्योर ने भी लिखा है कि वे सन्देष्टा और ईश्वर के प्रतिनिधि थे।[2]

पराक्रम अष्टगुणों में पाँचवाँ गुण है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) काफ़ी पराक्रमी भी थे। आपके पराक्रम को दर्शाते हुए डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने एक घटना का ज़िक्र किया है जो इस प्रकार है—

'किसी गुफा में अकेले उपस्थित रुकाना पहलवान, जो क़ुरैश से सम्बन्धित था, से मुहम्मद (सल्ल०) ने ईश्वर से न डरने और ईश्वर पर विश्वास न करने का कारण पूछा, जिसपर पहलवान ने सत्य की स्पष्टता के लिए कहा। तब मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि तू बड़ा वीर है, यदि कुश्ती में मैं तुझे नीचा दिखाऊँ तो क्या विश्वास करेगा? उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। तब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उसे हरा दिया। (अल्लामा क़ाज़ी सलमान मंसूरपुरी ने अपनी सीरत की किताब "रहमतुललिल आलमीन" में "शिफ़ा" नामक पुस्तक के पृष्ठ 64 के हवाले से लिखा है कि आप (सल्ल०) ने उसे तीन बार हराया, फिर भी उस पहलवान ने मुहम्मद (सल्ल) को पैग़म्बर न माना तथा ईश्वर की सत्यता पर विश्वास न किया।

आठ गुणों में अल्पभाषी होना एक विशिष्ट गुण है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कम बोलते थे। अधिकतर मौन रहते परन्तु जो कुछ बोलते थे, वह इतना प्रभावोत्पादक होता था कि लोग आपकी बातें नहीं भूलते थे।[3]

दान देना महापुरुषों का एक प्रमुख गुण रहा है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

1. Modesty and kindliness, patience, self deanial and riveted the affections off all around him, p. 525, Life of Mohamed' by Sir Willaim Muir.
2. He was now the Servant, the Prophet, the vice gerent of God.
3. Introduction The speeches of Mohammad by Lane-Pool Page-24

दान देने से पीछे नहीं हटते। यही कारण था कि आपके घर पर ग़रीबों की भीड़ लगी रहती थी। आपके घर से कभी कोई निराश होकर नहीं लौटा।

मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों में कृतज्ञता भी थी। वे किसी के उपकार को नहीं भूलते। अनसार के प्रति कहे गए वाक्य आपकी कृतज्ञता का प्रमाण पेश करते हैं।[1] इस प्रकार यह सिद्ध हो गया कि मुहम्मद (सल्ल०) में आठों ईश्वरीय गुणों का समावेश था।

8. शरीर से सुगन्ध का निकलना—भागवत पुराण में भविष्यवाणी की गई है कि कल्कि के शरीर से ऐसी सुगन्ध निकलेगी, जिससे लोगों के मन निर्मल हो जाएँगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।[2] शिमायल तिरमिज़ी में लिखा है कि मुहम्मद (सल्ल०) के शरीर की ख़ुशबू तो प्रसिद्ध ही है। मुहम्मद (सल्ल०) जिससे हाथ मिलाते थे, उसके हाथ से दिनभर सुगन्ध आती रहती थी।[3]

एक बार उम्मे सुलैत ने मुहम्मद (सल्ल०) के शरीर का पसीना एकत्र किया। आप (सल्ल०) के पूछने पर उन्होंने बताया कि इसे हम ख़ुशबूओं में मिलाते हैं क्योंकि यह सभी सुगन्ध से बढ़कर है।

9. अनुपम कान्ति से युक्त—कल्कि अनुपम कान्ति से युक्त होंगे।[4] बुख़ारी शरीफ़ की हदीस के मुताबिक़ मुहम्मद (सल्ल०) सभी व्यक्तियों में अधिक सुन्दर थे और सभी मनुष्यों में अधिक आदर्शवान एवं योद्धा थे।[5] सर विलियम म्योर ने भी मुहम्मद (सल्ल०) को बहुत सुन्दर स्वरूपवाला, पराक्रमी और दानी बताया है।[6]

---

1. असह उस सियर, पृ० 343
2. अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
   वासु देवांगरागाति पुण्यगन्धानिल स्पृशाम्।
   (भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 21वाँ श्लोक)
3. पृष्ठ 208, शिमाएल तिरमिज़ी, अनुवाद : मौलाना मुहम्मद ज़करिया
4. विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः।
   नृपलिंगच्छदो दस्यून्कोटिशोनिहनिष्यति॥
   (भा० पु० , द्वादश स्कंध, द्वितीय अध्याय, 20वाँ श्लोक)
5. हज़रत अनस (रज़ि०) की रिवायत, जमउल फ़वायद, पेज 178
6. 'He was' says an admiring followen, the handsomest and bravest, the bright faced and most generous of men., P. 523, The Life of Mohammad'

10. ईश्वरीय वाणी का उपदेष्टा—डा० वेद प्रकाश उपाध्याय 'कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब' के पृष्ठ 50, 51 पृष्ठ पर लिखते हैं कि 'कल्कि के विषय में यह बात भारत में प्रसिद्ध ही है कि वह जो धर्म स्थापित करेंगे वह वैदिक धर्म होगा और उनके द्वारा उपदिष्ट शिक्षाएँ ईश्वरीय शिक्षाएँ होगी। मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा अभिव्यक्त क़ुरआन ईश्वरीय वाणी है, यह तो स्पष्ट ही है, भले ही हठी लोग इस बात को न मानें। क़ुरआन में जो नीति, सदाचार, प्रेम, उपकार आदि करने के लिए प्रेरणा के स्रोत विद्यमान हैं, वही वेद में भी है। क़ुरआन में मूर्ति पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा, परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश है। वेद में 'एकम् सत्' तथा विश्वबन्धुत्व की उत्कृष्ट घोषणा है। वेदों में ईश्वर की भक्ति का आदेश है और क़ुरआन की शिक्षा के द्वारा मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ अवश्य पढ़ते हैं, जबकि ब्राह्मण वर्ग में बिरले लोग ही त्रिकाल संध्या करनेवाले मिलेंगे।

यहाँ यह तथ्य उजागर करना उचित होगा कि वेदों और क़ुरआन की शिक्षाओं में भी बहुत कुछ समानता है। मिसाल के तौर पर वेद, गीता और स्मृतियों में एक ईश्वर की भक्ति करने का आदेश है और अपनी की हुई बुराइयों की क्षमा माँगने के लिए भी उसी ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश है। क़ुरआन में है : "ऐ नबी ! कह दो, मैं तो केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य अकेला पूज्य है, तो तुम सीधे उसी की ओर मुख करो और क्षमा भी उसी से माँगो।[1] डा० उपाध्याय कहते हैं कि कल्कि और मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे मिला उसे देखकर आश्चर्य होता है कि जिन कल्कि की प्रतीक्षा में भारतीय बैठे हैं, वे आ गए और वही मुहम्मद साहब हैं।[2]

---

1. हा० मीम० अस सजदा आयत संख्या 6।
2. कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ० 59

उपनिषद् में भी मुहम्मद (सल्ल०) की चर्चा

उपनिषदों में भी मुहम्मद साहब और इस्लाम के बारे में जहाँ-तहाँ उल्लेख मिलता है। नागेन्द्र नाथ बसु द्वारा संपादित विश्वकोष के द्वितीय खण्ड में उपनिषदों के वे श्लोक दिए गए हैं, जो इस्लाम और पैग़म्बर (सल्ल०) से ताल्लुक़ रखते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख श्लोक और उनके अर्थ प्रस्तुत किए जा रहे हैं ताकि पाठकों को वास्तविकता का पता चल सके—

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्त ।
इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्दुद: ।
हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्काम: ॥1 ॥
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्रा: ।
अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ॥2 ॥
अल्लो रसूल महामद रकबरस्य अल्लो अल्लाम् ॥3 ॥

(अल्लोपनिषद 1, 2, 3)

अर्थात, "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्रा वरुण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरुण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो ! उस अल्लाह को अपना पूज्य समझो। वह वरुण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। वह इन्द्र है, श्रेष्ठ इन्द्र। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पूर्ण और सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसूल हैं। अल्लाह आदि, अंत और सारे संसार का पालनहार है। तमाम अच्छे काम अल्लाह के लिए ही हैं। वास्तव में अल्लाह ही ने सूरज, चाँद और सितारे पैदा किए हैं।"

उपयुक्त उद्धरणों से यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट हुआ कि सर्वशक्तिमान अल्लाह एक है और मुहम्मद (सल्ल०) उसके सन्देशवाहक (पैग़म्बर) हैं। इस उपनिषद के अन्य श्लोकों में भी इस्लाम और मुहम्मद (सल्ल०) की साम्यगत बातें आई हैं। इस उपनिषद में आगे कहा गया है—

आदल्ला बूक मेककम् । अल्लबूक निखादकम् ॥ 4 ॥
अलो यज्ञेन हुत हुत्वा अल्ला सूर्य्य चन्द्र सर्वनक्षत्रा: ॥ 5 ॥
अल्लो ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्राय पूर्व माया परमन्तरिक्षा ॥6 ॥
अल्ल: पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम् ॥ 7 ॥

इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला: ॥ 8 ॥
ओम् अल्ला इल्लल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वण श्यामा हुह्री जनान पशून सिद्धान
जलवरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट ॥ 9 ॥
असुरसंहारिणी हूं ह्रीं अल्लो रसूल महमदरकबरस्य अल्लो अल्लाम्
इल्लल्लेति इल्लल्ला ॥ 10 ॥
इति अल्लोपनिषद

अर्थात् "अल्लाह ने सब ऋषि भेजे और चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों को पैदा किया। उसी ने सारे ऋषि भेजे और आकाश को पैदा किया। अल्लाह ने ब्रह्माण्ड (ज़मीन और आकाश) को बनाया। अल्लाह श्रेष्ठ है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। ऐ पुजारी ! कह दे, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। अल्लाह अनादि से है। वह सारे विश्व का पालनहार है। वह तमाम बुराइयों और मुसीबतों को दूर करनेवाला है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं, जो इस संसार का पालनहार है। अत: घोषणा करो कि अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।"[1]

---

1. बहुत थोड़े से विद्वान, जिनका संबंध विशेष रूप से आर्यसमाज से बताया जाता है, अल्लोपनिषद् की गणना उपनिषदों में नहीं करते और इस प्रकार इसका इनकार करते हैं, हालाँकि उनके तर्कों में दम नहीं है। इस कारण से भी हिन्दू धर्म के अधिकतर विद्वान और मनीषी अपवादियों के आग्रह पर ध्यान नहीं देते। गीता प्रेस (गोरखपुर) का नाम हिन्दू धर्म के प्रामाणिक प्रकाशन केन्द्र के रूप में अग्रगण्य है। यहाँ से प्रकाशित "कल्याण" (हिन्दी पत्रिका) के अंक अत्यंत प्रामाणिक माने जाते हैं। इसकी विशेष प्रस्तुति "उपनिषद अंक" में 220 उपनिषदों की सूची दी गई है, जिसमें अल्लोपनिषद् का उल्लेख 15वें नंबर पर किया गया है। 14वें नंबर पर अमत बिन्दूपनिषद् और 16वें नंबर पर अवधूतोपनिषद् (पद्य) उल्लिखित है। डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी अल्लोपनिषद को प्रामाणिक उपनिषद् माना है। 'देखिए : वैदिक साहित्य : एक विवेचन, प्रदीप प्रकाशन, पृ० 101, संस्करण 1989.

प्राणनाथी (प्रणामी) सम्प्रदाय की शिक्षा

हिन्दुओं के वैष्णव समुदाय में प्राणनाथी सम्प्रदाय उल्लेखनीय है। इसके संस्थापक एवं प्रवर्तक महामति प्राणनाथ थे। आपका जन्म का नाम मेहराज ठाकुर था। प्राणनाथजी का जन्म 1618 ई० में गुजरात के जामनगर शहर में हुआ था। आपने इन्सानों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी और एक ही निराकार ईश्वर की पूजा-उपासना पर बल दिया। आपने नुबूव्वत अर्थात ईशदूतत्व की धारणा का समर्थन किया और इसे सही ठहराया। प्राणनाथ जी कहते हैं—

कै बड़े कहे पैगमंर, पर एक महमंद पर खतम।

अर्थात, धर्मग्रन्थों में अनेकों पैग़म्बर बड़े कहे गए, किन्तु मुहम्मद साहब पर ईशदूतों की शृंखला समाप्त हुई। रसूल मुहम्मद (सल्ल०) आख़िरी पैग़म्बर हुए।[1]

प्राणनाथ जी ने एक स्थान पर लिखा—

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अरस की, देखी सब पेहेचान॥

अर्थात, (ईश्वर ने कहा :) मेरा रसूल मुहम्मद तुम्हारे पास मेरा संदेश लेकर आएगा। वह संसार में आकर तुम्हें मेरे अर्श या परमधाम की सब तरह से पहचान कराने के लिए कुछ संकेत देगा।[2]

1. मारफ़त सागर, पृ० 39, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली।
2. मारफ़त सागर, पृ० 19, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और बौद्ध धर्म ग्रन्थ

अंतिम बुद्ध-मैत्रेय और मुहम्मद (सल्ल०)

बौद्ध ग्रन्थों में जिस अन्तिम बुद्धि मैत्रेय के आने की भविष्यवाणी की गई है, वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही सिद्ध होते हैं। 'बुद्ध' बौद्ध धर्म की भाषा में ऋषि होते हैं। गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु के समय अपने प्रिय शिष्य आनन्दा से कहा था कि "नन्दा ! इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न तो अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत् में सत्य और परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और 'बुद्ध' आएगा। वह पवित्र अन्तःकरणवाला होगा। उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा समस्त लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने संसार को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की, उसी प्रकार वह भी विश्व को सत्य की शिक्षा देगा। विश्व को वह ऐसा जीवन-मार्ग दिखाएगा जो शुद्ध तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा ! उसका नाम मैत्रेय होगा।[1] 'बुद्ध' का अर्थ 'बुद्धि से युक्त' होता है। बुद्ध मनुष्य ही होते हैं, देवता आदि नहीं।[2] मैत्रेय का अर्थ 'दया से युक्त' होता है।

मैत्रेय की मुहम्मद (सल्ल०) से समानता

अंतिम बुद्ध मैत्रेय में बुद्ध की सभी विशेषताओं का पाया जाना स्वाभाविक है। बुद्ध की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

1. वह ऐश्वर्यवान् एवं धनवान होता है।
2. वह सन्तान से युक्त होता है।
3. वह स्त्री और शासन से युक्त रहता है।
4. वह अपनी पूर्ण आयु तक जीता है।[3]

1. Gospel of Buddha, by Carus, p-217
2. It is only a human being that can be a Buddha, a deity can not. (Mohammad in the Buddist Scriptures P. 1)
3. Warren, P. 79

5. वह अपना काम खुद करता है।[1]

6. बुद्ध केवल धर्म प्रचारक होते हैं।[2]

7. जिस समय बुद्ध एकान्त में रहता है, उस समय ईश्वर उसके साथियों के रूप में देवताओं और राक्षसों को भेजता है।[3]

8. संसार में एक समय में केवल एक ही बुद्ध रहता है।[4]

9. बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, जिन्हें कोई भी उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।[5]

10. उसका कोई व्यक्ति गुरु न होगा।[6]

11. प्रत्येक बुद्ध अपने पूर्णवर्ती बुद्ध का स्मरण कराता है और अपने अनुयायियों को 'मार' से बचने की चेतावनी देता है।[7] मार का अर्थ बुराई और विनाश को फैलानेवाला होता है। इसे शैतान कहते हैं।

12. सामान्य पुरुषों की अपेक्षा बुद्धों की गर्दन की हड्डी अत्यधिक दृढ़ होती थी, जिससे वे गर्दन मोड़ते समय अपने पूरे शरीर को हाथी की तरह घुमा लेते थे।

अंतिम बुद्ध मैत्रेय की इनके अलावा अन्य विशेषताएँ भी हैं। मैत्रेय के दयावान होने और बोधि वृक्ष के नीचे सभा का आयोजन करनेवाला भी बताया गया है। इस वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति होती है।

डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने यह सिद्ध किया है ये सभी विशेषताएँ मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन में मिलती हैं तथा अंतिम बुद्ध मैत्रेय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं। डा० उपाध्याय द्वारा इस विषय में प्रस्तुत तथ्य यहाँ ज्यों के त्यों प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

'क़ुरआन में मुहम्मद साहब के ऐश्वर्यवान और धनवान होने के विषय में यह ईश्वरीय वाणी है कि 'तुम पहले निर्धन थे, हमने तुमको धनी बना दिया'।

1. The Dhammapada, S.B.E. Vol. X. P. 67
2. 'The Tathagatas are only preachers. (The Dhammapada S.B.E. Vol X. P. 67)
3. Saddharma-Pundrika, S.B.E. Vol. XXI., P. 225
4. The life and teachings of Buddha, Anagarika Dhammapada P. 84
5. Dhammapada, S.B.E. Vol. X. P. 67
6. Romantic History of Buddha, by Beal, P. 241
7. Dhammapada, S.B.E. Vol. XI, P. 64

मुहम्मद साहब ऋषि पद प्राप्त करने के बहुत पहले धनी हो गए थे।[1] मुहम्मद साहब के पास अनेक घोड़े थे। उनकी सवारी के रूप में प्रसिद्ध ऊँटनी 'अलकसवा' थी, जिस पर सवार होकर मक्का से मदीना गए थे और बीस की संख्या में ऊँटनियाँ थीं, जिसका दूध मुहम्मद साहब और उनके बाल-बच्चों के पीने के लिए पर्याप्त था, साथ ही साथ सभी अतिथियों के लिए भी पर्याप्त था। ऊँटनियों का दूध ही मुहम्मद साहब व उनके बाल-बच्चों का प्रमुख आहार था। मुहम्मद साहब के पास सात बकरियाँ थीं, जो दूध का साधन थीं। मुहम्मद साहब दूध की प्राप्ति के लिए भैंसें नहीं रखते थे, इसका कारण यह है कि अरब में भैंसे नहीं होतीं।[2] उनकी सात बाग़ें खजूर की थीं जो बाद में धार्मिक कार्यों के लिए मुहम्मद साहब द्वारा दे दी गई थीं।

मुहम्मद साहब के पास तीन भूमिगत सम्पत्तियाँ थीं, जो कई बीघे के क्षेत्र में थीं। मुहम्मद साहब के अधिकार में कई कुएँ भी थे। इतना स्मरणीय है कि अरब में कुआँ का होना बहुत बड़ी सम्पत्ति समझी जाती थी, क्योंकि वहाँ रेगिस्तानी भू-भाग है। मुहम्मद साहब की 12 पत्नियाँ, चार लड़कियाँ और तीन लड़के थे। बुद्ध के अंतर्गत पत्नी और संतान का होना द्वितीय गुण है। मुहम्मद साहब के पूर्ववर्ती भारतीय बुद्धों में यह गुण नाम मात्र को पाया जाता था, परन्तु मुहम्मद साहब के पास उसका 12 गुना गुण विद्यमान था।[3]

मुहम्मद साहब ने शासन भी किया। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने बड़े-बड़े राजाओं को पराजित करके उनपर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अरब के सम्राट होने पर भी उनका भोज्य पदार्थ पूर्ववत् था।[4]

मुहम्मद साहब अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहे। अल्पायु में उनका देहावसान नहीं हुआ और न तो वे किसी के द्वारा मारे गए।

मुहम्मद साहब अपना काम स्वयं कर लेते थे। उन्होंने जीवन भर धर्म का प्रचार किया। उनके धर्म प्रचारक स्वरूप की पुष्टि अनेक इतिहासकारों ने भी की

1. 'व-व-ज-द-क आ-इलन फ़अग्ना' (और तुमको निर्धन पाया, बाद में तुमको धनी कर दिया)
2. Life of Mahomet-Sir William Muir (Cambridge Edition) P. 545-54
3. Life of Mahomet-Sir William Muir (Cambridge Edition) P. 547
4. 'The fare of the desert seemed most congenial to him, even when he was sovereign of Arabia.'
The Speeches an table talk of the Prophet Mohammad by Lanepoole

है ।[1]

मुहम्मद साहब ने भी अपने पूर्ववर्ती ऋषियों का समर्थन किया, इस बात के लिए आप पूरा क़ुरआन देख सकते हैं। उदाहरण के रूप में क़ुरआन में दूसरी सूरा में उल्लेख है—

"ऐ आस्तिको ! (मुसलमानो) तुम कहो कि हम ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हैं और जो पुस्तक हमपर अवतीर्ण हुई, उसपर और जो-जो कुछ इब्राहीम, इसमाईल और याक़ूब पर और उनकी संतान (ऋषियों) पर और जो कुछ मूसा और ईसा को दी गई उनपर भी और जो कुछ अनेक ऋषियों को उनके पालक (ईश्वर) की ओर से उपलब्ध हुई, उनपर भी हम आस्था रखते हैं और उन ऋषियों में किसी प्रकार का अंतर नहीं मानते हैं, और हम उसी एक ईश्वर के माननेवाले हैं।"[2]

मुहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों को शैतान से बचने की चेतावनी बार-बार दी थी। क़ुरआन में शैतान से बचने के लिए यह कहा गया है कि जो शैतान को अपना मित्र बनाएगा, उसे वह भटका देगा और नारकीय कष्टों का मार्ग प्रदर्शित करेगा।[3]

मुहम्मद साहब के अनुयायी कभी भी मुहम्मद साहब के बताए हुए मार्ग से विचलित न होते हुए उनकी पक्की शिष्यता अथवा मैत्री में आबद्ध रहते हैं। मुहम्मद साहब के अनुयायियों ने आमरण उनका संग नहीं छोड़ा, भले ही उन्हें कष्टों का सामना करना पड़ा हो। संसार में जिस समय मुहम्मद साहब बुद्ध थे, उस समय किसी भी देश में कोई अन्य बुद्ध नहीं था। मुहम्मद साहब के बुद्ध होने के समय सम्पूर्ण संसार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति बहुत ही ख़राब थी।

मुहम्मद साहब का कोई भी गुरु संसार का व्यक्ति नहीं था। मुहम्मद साहब पढ़े-लिखे भी नहीं थे, इसी लिए उन्हें 'उम्मी' भी कहा जाता है। ईश्वर द्वारा मुहम्मद साहब के अंतःकरण में उतारी गई आयतों की संहिता क़ुरआन है। प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। किसी बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अश्वत्थ (पीपल), किसी के लिए न्यग्रोध (बरगद) तथा किसी बुद्ध के लिए उदुम्बर (गूलर) प्रयुक्त हुआ है। बुद्ध के लिए जिस बोधिवृक्ष का होना बताया

1. Mohammad and Mohammadenism by Bosworth Smith, P. 98
2. क़ुरआन, सूरा-2, आयत 136
3. क़ुरआन, सूरा-22, आयत 4

गया है, वह कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष है।[1]

हज़रत मुहम्मद साहब के लिए बोधिवृक्ष के रूप में हुदैबिया स्थान में एक कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष था, जिसके नीचे मुहम्मद साहब ने सभा भी की थी।

'मैत्रेय' का अर्थ होता है—दया से युक्त। 16 अक्तूबर सन् 1930 'लीडर' पृ० 7 कॉलम 3 में एक बौद्ध ने 'मैत्रेय' का अर्थ 'दया' किया है। मुहम्मद साहब दया से युक्त थे। इसी कारण मुहम्मद साहब को "रहमतुललिल आलमीन" कहा जाता है।[2] जिसका अर्थ है—'समस्त संसार के लिए दया से युक्त।' ('नराशंस और अंतिम ऋषि' पृष्ठ 54 से 58)

स्वर्गीय बोधिवृक्ष बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में है। कहा गया है कि बुद्ध स्थिर दृष्टि से उस बोधिवृक्ष को देखता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी जन्नत में एक वृक्ष देखा था, जो ईश्वर के सिंहासन के दाहिनी ओर विद्यमान था। यह वृक्ष इतने बड़े क्षेत्र में था जिसे एक घुड़सवार लगभग सौ वर्षों में भी उसकी छाया को पार नहीं कर सकता।[3] हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी स्वर्गीय वृक्ष को आँख गड़ाए हुए देखा था।

मैत्रेय के बारे में यह भी कहा गया है कि किसी भी तरफ़ मुड़ते समय वह अपने शरीर को पूरा घुमा लेगा। मुहम्मद साहब भी किसी मित्र की ओर देखते समय अपने शरीर को पूरा घुमा लेते थे।[4]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि बौद्ध ग्रन्थों में जिस मैत्रेय के आने की भविष्यवाणी की गई है वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हैं।

1. According to some of the modern Buddhist Scholars the Bo-tree of the Buddha Maiterya is the Iron wood-tree (Mohammad in the Buddhist Scriptures, P. 64)
2. वमा अर्सल्ना-क इल्ला रहमतलिल आलमीन (क़ुरआन, सूरा-11, आयत 107)
(ऐ मुहम्मद ! हमने तुमको सारी दुनिया के लिए दया बनाकर भेजा।)
3. In Paradise there is a tree (such) that a rider can not cross its shade even in hundred years. (Mohammad in the Buddhist Scriptures, Page 79)
4. If the turned in conversation towards a friend he turned not partially but with his full face and his whole body. (The Life of Mahommat by William Muir, Page 511, 512)

जैन धर्म और
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

डॉ० पी०एच० चौबे ने लिखा है—

"मैं मुहम्मद (सल्ल०) को कल्कि अवतार मानता हूँ। पुराणों में इस अवतार (पैग़म्बर) का वर्णन है। कहा गया है कि कल्कि अवतार बुद्धावतार के बाद होगा, जिसका जन्म शम्भल नामक नगर में एक पुजारी परिवार में होगा, उसकी सवारी घोड़ा और हथियार तलवार होगा। वह सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपने सत्य धर्म की विजय करेगा। (विस्तृत विवरण के लिए देखें कल्कि पुराण)

जैन धर्म के ग्रंथकारों ने भी कल्कि अवतार का वर्णन किया है और उसके आने का काल महावीर स्वामी ने निर्वाण के एक हज़ार वर्ष बाद माना है। महावीर स्वामी के निर्वाण का वर्ष प्राय: 571 ई०पू० निश्चित किया जाता है। इस प्रकार एक हज़ार वर्ष बाद कल्कि अवतार का आगमन होता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्मकाल वही वर्ष पड़ता है जो कल्कि अवतार के आने का काल है। कल्कि अवतार की अन्य विशेषताएँ और उसके गुण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से साम्यता रखते हैं। एक प्रसिद्ध जैन लेखक जिसने अपने ग्रंथ हरिवंश पुराण में लिखा है कि महावीर के निर्वाण के 605 वर्ष 5 माह बाद शक राज का जन्म हुआ तथा गुप्त संवत 231 वर्ष के शासन के बाद कल्कि अवतार का जन्म हुआ। इस आशय का श्लोक इस प्रकार है—

"..... गुप्तानां चशत द्रयम।
एक विंवश च वर्षाणि कालविद् भिरुदा हृतम ॥490॥
चित्वा रिंश देवात: कल्किराजस्य राजता।
ततोड जिटंजयों राजा स्यादिन्द्रपुर संस्थित: ॥491॥

—जिनसेन कृत हरिवंश पुराण अ० 60

दूसरे जैन ग्रंथकार गुणभद्र ने उत्तर पुराण में लिखा है कि महावीर निर्वाण के 1000 वर्ष बाद कल्किराज का जन्म हुआ। (Indian Antiquary Vol. X V.P. 143)

तीसरे जैन गंथकार नेमिचन्द्र अपने ग्रंथ 'त्रिलोकसागर' में लिखते हैं, "शकराज निर्वाण के 605 वर्ष 5 माह बाद तथा शककाल से 394 वर्ष 7 माह पश्चात कल्कि राज पैदा हुआ।" इस ग्रंथ में इस भाव का वाक्य है—

"पणछस्सयं वस्संपण मासजदं गमिय वीर णिवुइ दो।
सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं ॥" —त्रिलोकसार, पृ० 32

इस प्रकार ऐसा लगता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) वही थे, धर्माचायों ने जिनके बारे में बताया।

सचमुच जिस प्रकार जब तक एक शासक शासन करता है तब तक उसके द्वारा बताए नियम का पालन जनता करती है, परन्तु उसके शासन के समाप्त होते ही दूसरे शासक के आदेशों को लोग शिरोधार्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार जब तक जिस शास्ता, अवतार, पैग़म्बर का काल रहता है उसकी आज्ञाओं-उपदेशों का फैलाव होता है परन्तु उसके उपदेशों में विकृति आते ही ईश्वर की तरफ़ से जब दूसरा पैग़म्बर, अवतार आता है तो उसका शासन चलता है। इस लिहाज़ से आज हम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम 'रसूल' अथवा आख़िरी अवतार 'कल्कि' के 'शासन काल' में हैं और अब प्रलय (क़ियामत) तक उनका शासन रहेगा, जिसका प्रमाण पुराण, क़ुरआन और अन्य ग्रन्थ दे चुके हैं। अतएव हमारे लिए इस अन्तिम शास्ता (हज़रत मुहम्मद) के ही 'शासन' में रहकर आपके उपदेशों व आचारों का अनुगमन करना ही आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों से उचित है। इससे हमारा संसार व परलोक दोनों सुधर सकता है।

अत: अन्तिम संदेष्टा, पैग़म्बर, 'कल्कि अवतार' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के उपदेशों का अनुगमन ही आपके प्रति सही एवं सच्चे अर्थों में श्रद्धा-अर्पण होगा। यही ईश समर्पण के लिए सच्चा मार्ग होगा।"[1]

1. कान्ति मासिक (दिल्ली), जुलाई 1997, पृ० 33-34

END